# मानवी - नारी की मानवता

अँबिकेय भदौरिया

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

**BLUEROSE PUBLISHERS**
India | U.K.

Copyright © Ambikay Bhadoria 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-895-7

Cover design: Ambikay Bhadoria
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: October 2025

# भूमिका

कविता को लिखना, पढ़ना, समझना अथवा सुनाना, जीवन के रस को जाग्रत करने और उसे सहज बनाने का साधन है। लिखना मैंने बहुत पहले प्रारम्भ किया था, किन्तु समय की गति के साथ जीवन की व्यस्तताओं ने इसे निरंतरता नहीं प्रदान की। परन्तु सत्य यही है कि जीवन में कभी-कभी एक क्षण ऐसा आता है, जो हमें झकझोर कर परिवर्तन की ओर अग्रसर कर देता है। वही क्षण सुप्त पड़ी शक्तियों को पुनः जाग्रत करता है और मौन पड़े भावों को अभिव्यक्ति देता है।

यह संग्रह प्रारम्भ में प्रस्तुत करने का मेरा विचार नहीं था। किन्तु जब यह अनुभव हुआ कि कुछ विशेष व्यक्तित्वों की प्रेरणा एवं सहयोग के कारण मेरी कलम की स्याही फिर से मुखर हुई है, तो उन्हें धन्यवाद ज्ञापित करने का सर्वोत्तम मार्ग यही प्रतीत हुआ कि इस संग्रह को उन्हीं के नाम समर्पित किया जाए।

इस पुस्तक का शीर्षक “मानवी” उसी व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है, जिसने सदैव मुझे प्रेरित किया—“भैया, आप लिखो, फिर लिखो…” और उसी निरंतर आग्रह ने आज इन कविताओं को जन्म दिया है।

इस संग्रह में पाठकों को विविध रसों की अनुभूति होगी—प्रेम के भाव, ध्यान की ओर ले जाने वाले पथ की झलकियाँ, जीवनानुभव और व्यंग्य की सजीव छटा।

मेरी साहित्यिक यात्रा सरल नहीं रही। इसमें अनेक मार्गदर्शकों और सहायक व्यक्तियों का योगदान रहा है। लखनऊ निवासी पंडित अखिलेश तिवारी, जो

मेरे लिए गुरु-तुल्य हैं, ने मेरी प्रतिभा को निखारने में अद्भुत सहयोग दिया। मेरे साथ सदैव खड़े रहने वाले विकास और सचिन, जिन्होंने शिकोहाबाद में रहते हुए मुझे प्रोत्साहित किया, उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

गोपाल डेयरी के शोभित भैया, जिन्होंने सदा कहा—"अंबिकय, तुम सही मार्ग पर हो"—उनकी स्मृति मेरे लिए अनमोल है।

इसके अतिरिक्त मेरे वे प्रिय मित्र, जिन्होंने मेरी रचनाओं को निःस्वार्थ भाव से सुना और सराहा—शिवम यादव, सिद्धार्थ रोंढेला, अहसान खान, प्रिंस यादव, अंशुमान, अंतरिक्ष, मानव, विष्णु, हिमांशु, विकास भैया, तथा इंस्टाग्राम से जुड़े हुए कबड्डी खिलाड़ी यश भगेल (एम.पी. जूनियर)—इन सबका आभार व्यक्त करना मेरा कर्तव्य है।

विशेष उल्लेख उन संदीप भदौरिया भैया का, जिन्होंने अनवरत परिश्रम कर इस संग्रह को ग्रंथरूप प्रदान किया।

अतः यह कहना उचित होगा कि यह काव्य-संग्रह केवल मेरा नहीं, बल्कि उन सबके सहयोग, स्नेह और आशीर्वाद का परिणाम है, जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मेरा साथ दिया।

यह पुस्तक प्रभु श्रीराम के श्रीचरणों में विनीत भाव से समर्पित है। मेरी प्रार्थना है कि यह जनसाधारण के लिए प्रेरणा-स्रोत बने और प्रत्येक पाठक को अपने अनुरूप इसमें कुछ न कुछ प्राप्त हो।

**— लेखक**

# अनुक्रम


मानवी....................................1
पंथ की परम्परा....................................2
जीवन का सच्चा रस....................................3
वक्त की सीख....................................4
स्वजन अवतरण....................................5
दीवाली के अंधेर....................................6
आओ गोपाल...2 करुणा सागर दीन दयाल....................................8
जिन्दगी बजार है....................................9
अंजान संसार....................................10
जनता के प्रदीप....................................11
सच्चे मित्र का मतलब क्या....................................12
समर्पित अंतरंग....................................13
सपनों का संजोग....................................14
तारंगों की अनुगूंज....................................15
धारा और ध्येय....................................16
एक इंसान बाकी है....................................17
नारीः सृजन और सम्मान....................................18
बिछड़ते लम्हों की गूंज....................................19
प्रतिबिम्ब और प्रवाह....................................20
चलके देखो....................................21
चकोर-सी तुम....................................22
तुम्हारी ही बात....................................23
धूल से शीतल छाया तक....................................24
डायरी में लिखा ओस....................................25
छिलकन का त्याग....................................26

एक रानी की गाथा (महारानी गायत्री देवी को समर्पित)................ 27
आयो रे नटखट.......................................................28
चलते-चलते..........................................................29
तुमसे ही...............................................................30
विचारः उद्गम से अनंत तक........................................31
जब समझ न आये ...................................................32
हर रोज एक फल.....................................................33
यक्ष प्रश्न...............................................................34
संसार अच्छा लगता है.............................................35
समझो तुम...........................................................36
करो मुलाकात....................................................... 37
उद्‌गम तो होगा......................................................38
वो एक चित्र..........................................................39
पापा सिर्फ यह कहना है .........................................40
कुछ सहारे डूब गए.................................................41
स्वस्थ था शरीर.....................................................42
पड़ोस के अय्यैर अंकल ...........................................43
भीड़ भरा शहर......................................................44
समीपता.............................................................. 45
तुम्हें ही ढूँढा..........................................................46
खुद को सँवार लो ................................................ 47
डायरी में लिखता हू................................................48
एक दुविधा है .......................................................49
आप जैसी सोच नहीं चाहिए.... ...............................50
यात्रा की प्रतीक्षा....................................................51
मंच पर हम सब.....................................................52

# मानवी

(नारी की मानवता)
मानवी नाम तो है एक गुड़िया का।
हर आसमान को चीर के उड़ती है, उस चिड़िया का।।
बड़ों का खयाल भी है उसे, उत्साह है यारों का।
तुम जानते जाओ उसे वह गहरी है, संगम है किरदारों का।।
उसने सबके लिए सोचा है, समझा है इतनी समझदार है वो।
घर की श्री के गुण भीं हैं और करियर का ख्याल भी,
अद्‍भुत किरदार है वो।
जैसा कि नाम मानवी है, मानवता की पूरी झलक मिलेगी।
तुम सब चैन से सो पाओ,
चिन्ता में जागेगी उसकी खुली पलक मिलेगी।।
खुलके हसेगी तुम्हें हर वक्त कुछ बता सकती है।
मैंने मानवी को जितना समझा यह देखा वो
ऐसे समझ ना आ सकती है।।
दरअसल मानवी एक लड़की का नाम है।
पर यह किरदार एक सीख है कि कैसे जिऐं।।
उससे प्रेरणा ले सकतीं हैं लड़कियाँ, अपने दम पे खड़े होने की।
जीवन एक छाछ है जो मेहनत से मथें और इसको कैसे पियें।।

# पंथ की परम्परा

पंथ की परम्परा का शोर देखो
अंधियारे से उगती हुई भोर देखो।
इष्ट के एकत्व का एहसास है।
उस नित्य ब्रह्म की वह आस है।।
कितने विचार हैं कई समाचार हैं।
कितने मान गये कितने नाराज हैं।।
यह एक प्रस्तावित मार्ग है चलने को।
प्रकाश है कोई शाम नहीं ढलने को।।
इसमें धैर्य की परीक्षा भी है।
पूर्ण ब्रह्म की शिक्षा भी है।।
वह वीर गाथा है लाखों की।
लोह सलाखें नहीं जालों की।।
भगवान की भक्ति भी।
ध्याान योग की शक्ति भी।।
गुरू का है डंड भी।
एक राष्ट्र है अखण्ड की।।
एक मार्ग को चुनना तुम।
कर्म मार्ग कर्म से धुनना तुम।।
जीवन के धागे बुनलो तुम।
बिखरे पत्थरों में से हीरे चुनलो तुम।।

# जीवन का सच्चा रस

जीवन की कुछ घटनाओं में।
मुझे बताया सच्चा हर्ष क्या है।।
प्रभू प्रेम जो सच्चा मीत है।
जीवन में सच्चा रस क्या है।।
जाना अब ब्रज की गलियों में।
जहाँ सच्चा प्रेम बरसता है।।
दुनियाँ में मन लगाने बाला।
मछली की तरह तड़पता है।।
कृष्ण के प्रेम सा कोई प्यार नहीं।
उस प्रभू जैसा कोई दिलदार नहीं।।
दुनियाँ में बहुत सरकारें बदलीं।
पर उससी कोई सरकार नहीं।।

# वक्त की सीख

जीवन की एसी सख्त डोर पे।
और न किसी दर या छोर पे।।
पल जो उदास भी, पर सीखने को खास भी।
रण ये ज्ञान का आधुनिक विज्ञान का।।
सख्त पहरा मान पे, शायद झूंठे गुमान पे।
वक्त ने दिखा दिया, बहुत कुछ सिखा दिया।।
लाज ने समाज ने, असंतुलित प्रयास ने।
जीत की उम्मीद ने, हार की उस खीज ने।।
कष्ट के एहसास ने, शुभ फल की आस ने।
रक्त रंजित रास ने, युद्ध के प्रयास ने।।
एक नई शाम ने, एक नये आयाम ने।
वख्त ने सिखा दिया, कुछ नया दिखा दिया।।
भूल सुधारने को, दम्भ मारने को।
अहम जीतने को, खुद को पीसने को।।
कल सुधारने को, योग्यता निखारने को।
सत्य सीखने को, खुदको जीतने को।।
वख्त ने दिखा दिया, कुछ नया सिखा दिया।

# स्वजन अवतरण

आगमन स्वजन का, हर्ष सर्व मन का।
सुख पुंज सार है, क्षण वह उदार है।।
सामान्य जीवन के संघर्ष से दूर।
एक नई उम्मीद के जगमाते सूर्य।।
आगमन श्री गणेश का, श्री विष्णु संग श्री शेष का।
रक्त सम्बन्ध के उस रास का।।
पल एक और आत्म सम्भास का।
केवल नहीं आया एक जीव परदेश से।।
न जाने लाया कितने पल, जो जीवन में शेष थे।
हिल उठी वह धारा, जो बह रही थी समान्य सी।।
आपसी प्रेम और कुछ नहीं, है एक उसमें छवि श्री भगवान सी।

# दीवाली के अंधेर

प्रेम दीवाली राम की होती।
भक्ति रस रसिया सुख संजोती।।
तुलसी के दोहो से भीगी।
होती प्रीत राम सिया की।।
मानव क्या कीट भी तरते।
कितने निष्चर भूत विचरते।।
लक्ष्मी बिना आवाह्न के आती।
प्रभू संग निज आसन पाती।।
भक्त सिरोमणि श्री हनुमान आते।
शरणागतों के दुख कट जाते।।
मिलकर हरि का नाम सुमरते।
सारे प्राणी योनियाँ तरते।।
विडम्बना आज त्योहार की देखा।
मन बुद्धि विवेक से सोचो।।
क्या आज ये दीवाली वही है।
जो तुलसी ने मानस में कही है।।
द्वन्द मचाना कब प्रभू इच्छा।
आत्मा झूंठी तन सब सच्चा।।
सब झूंठे आभूषण भूसे।
कैसे किया त्योहार को दूषित।।
राम स्वभाव को न अपनाते।

रावण मति अनुरूप बनाते।।
करके दूषित जल थल दूषित अपनी।
कहते प्रभू की दीवाली मनाते।।

# आओ गोपाल...२
# करुणा सागर दीन दयाल

मेरा तुझसे रिश्ता जन्मों पुराना।
मैं आशिक हूँ तेरा दीवाना।।
मेरे लव पे हरदम तेरे फसाने।
तुझे ढूंढते ही गुजरे हैं जमाने।।
तेरे प्रेम की कोई कीमत नहीं है।
मौहब्बत तेरी हरपल मेरे में रही है।।
सुनो आ कान्हाँ अब धड़कन में आना।
मिटा के ये दूरी मन में समाना।।
तेरे प्यार में लाखों मर भी चुके हैं।
तेरे चरणों में कितने तर भी चुके हैं।।
अब जो न तूने दया की दृष्टि डाली।
मेरी जीवन की करनी फिर जायेगी खाली।।
तू प्रीतम है मेरा फिर क्यों राहें जुदा हैं।
ध्यान से ढूंढा, पर तू मन में कहाँ है।।
जन्मों की मिटा प्यास, अपना बना ले।
जन्म मृत्यु छुड़ा, बैकुण्ठ में जगा दे।।

# जिन्दगी बजार है

वक्त रूप और चाल के दोस्त भी हजार हैं,
आज के इस दौर में जीवन बजार है।
जीवन धारा तो है एक कहानी, सदियों से भी पुरानी।
समझना है इसको, तो बनो विवेकवान और ज्ञानी।
शास्त्र के तर्क से, शस्त्र के वार से।
खूब लड़ो आर्य, इस शत्रु संसार से।
जो निष्ठा निभाना जानता है, वह दानवीर कहलाएगा।
मित्र भले हो दुर्योधन, वो कर्ण की गति पायेगा।
शहर वही पर नजारे बदल गये, नदी वही पर किनारे बदल गये।
बदल गई तारा मण्डल की, आभा जहाँ की।
द्वार वहीं है पर सहारे बदल गये।
माया माया कर फिरा, माया मिली न कोऊ।
जो माया पति दास हो, मायादासी होऊ।
कभी मन गाना जब चाहे, इस जीवन का सार।
उठे तरंग एक प्रश्न बन, क्या जाना संसार।

# अंजान संसार

अंजान रहना संसार से अच्छा है।
मन सबको अनमोल है छोटा बच्चा है।।
अन्जानों में मित्रता और टकराव नहीं।
गुलाब के बगीचे और तलवार नहीं।।
न सुख में प्रीती है, न दुख की रीती है।
अन्जानों के बसती दुनियाँ, एक अलग समिति है।।
अन्जानों में न बैर है, न पूंछनी किसी की खैर है।
न अपने पल की आशा है, न नफरत की निरासा है।।
न वादों की कतार है, न झूंठे बचनों की कतार है।
न दुख देने की इच्छा है, न फैसला कौन झूंठा सच्चा है।।
रहो संसार में कर्तव्य करो अपना मानके।
सम रहो सबसे सब स्थिति में।।
जैसे तुम अन्जान थे।
जानकर भी व्यर्थ संसार को, क्या पाने की आशा है।।
मूल में भी अगर देखो, होश से।
तो मौन सत्य की भाषा है।।

# जनता के प्रदीप

धूप में जलते रास्तों का, छांव बन गये हैं वो,
अन्याय के अन्धेरों में, एक प्रकाश बन गये हैं वो।

सच की राह चलाने वाला, निडर वो प्रहरी है।
जनता के दुःख में शामिल, अपना ही कोई चेहरा है।

वर्दी पहन कर रोज़ वो, न्याय का दीप जलाते है,
हर डर को दूर भगाकर, उम्मीदों को जगाते हैं।

ना दिन की थकावट का गिला, ना रातों की नींद प्यारी,
जब भी जरुरत पड़ी हमें, वही बने हमारे सवारी।

चुप नहीं रहते अन्याय पर, आवाज बन वो उडते हैं,
संविधान की मर्यादा को, हर हाल में वो रखते हैं।

प्रदीप नाम ही जैसे कहे- ‘‘मैं अंधेरों में रोशनी हूँ’’,
जनता के हर दर्द में, मैं उनका साथी, उनकी गवाही हूँ।

# सच्चे मित्र का मतलब क्या

प्रीत से गीत का धागा पिरोते हैं।
मित्र वो हैं जो दो मन एक विचार होते हैं।।
आत्मा का मिलन नहीं मित्रता।
क्यों कि वो तो सिर्फ ब्रह्म से होती है।।
यह तो संसार के चर अचर में।
अपना एक भाव खोती है।।
वो हमारे भी और हमसे होते हैं।
मुस्कुराते तो दिखते हैं, पर दुख में साथ रोते हैं।।
यह एक ऐसा व्यवसाय है।
जिसमें उत्तम और परम वो स्वयं देते हैं।।
यों कहते तो हैं हरपल कि तुम खास नहीं।
पर तुम्हारे हर गुण को विश्वास के धागे में पिरोते हैं।।
मित्र वो हैं जो दो मन एक विचार होते हैं।

# समर्पित अंतरंग

जो स्याही से लिखता न कागज का दर्पण।
होता जो निष्ठुर अंतरंग समर्पण।।
न भटकती मेरी सादगी खाली जहाँ में।
जो धुलती जा रही है इस धूमिल जहाँ में।।
मैंने चाहा कि आकाश के तारे गिन लूं।
मैंने चाहा कि भ्रकुटी में हिमालय को चिन लूं।।
मैंने चाहा कि सागर के नीलम को ओढ़ लूं।
मैंने चाहा कि बहती बयार के वेग को मोड़ दूं।।
न राही मुझे तुझसा दोबारा मिलता।
तो झड़े हुए झरोखों में लालिमा न भरता।।
न निकलता अपनी टूटी पथरीली राह को संवारने।
जो तल से तरहटी तक डूबी उस कस्ती को उभारने।।
अब मिल सा रहा है खोया सा वह जहाँ फिर।
जहाँ आयेंगी कलियाँ, बसंत में फूलों की यहाँ फिर।।
बस इस बार सुगन्ध और रस को संवार लेना।
मेरे स्वप्न को संचित से दृष्टि में उतार लेना।।

# सपनों का संजोग

भाप बनकर उड़ न जाये, यह स्वघोषित संजोग।
धनभक्षी के मार्ग में न आये, यह फलता धनयोग।।
फिर से काले घने बादलों की ओट में।
न छुप जाये उगते सूरज की लालिमा।।
फिर से तिरोहित न हो जो।
विभूति से सुसज्जित मीठे हल्के पवन की सुगंधित झलकियाँ।।
फिर से फलती चन्द्रकला को।
राहू का ग्रहदोष न लगे।।
भरता जाये जो ज्योति।
पर वास्तविक कोष न बने।।
न फिर से चहकती बुलबुल।
एक सपने की पदचाप लेकर उढ़ जाये।।
नींद खुले, भ्रम हटे, सच जागे और अहसास हो कि।
फिर कल एक बालू का घरोंदा खो आये।।
खुल जाऊं मैं इतना आज में।
कि कल व्यथा न घेरे।।
न कोई विचार व्यर्थ जाये।
मेरे हर शब्द की सादगी और श्रोत,
पढ़ने वाले को समझ आये।।

# तारंगों की अनुगूंज

ये उलझती तरंगें कहना क्या चाह रहीं हैं।
सरोवर से संतुष्ट मन को पूर्णिमा का सागर क्यों बना रहीं हैं।।
मैं तो अपनी बुद्धि को कहीं और लगा रहा था।
फिर क्यों बहती बयार को वापस घेर के ला रहीं हैं।।
मैंने खुद की मौज में डूबना चाहा जब जब।
ऐसे ही मुझे आंधी के बबंडर में फंसा रहीं हैं।।
मैं जिनता ध्यान में उतरता जा रहा हूँ।
उतना संतुलन होते होते एक शोर मचा रहीं हैं।।
मैंने सोचा फर्क न पड़े मुझे किसी भी बात का।
ये तो पल पल चढ़ चढ़ अव्यक्तता ला रहीं हैं।।
आखिर मेरी अंतरंग तरंगें।
मुझसे कहना क्या चाह रहीं हैं।।
या तो मुझे झकझोर रहीं हैं।
या एक गहरे बिन्दु तक ले जा रहीं हैं।।
आखिर मेरी अंतरंग तरंगें।
मुझसे कहना क्या चाह रहीं हैं।।

# धारा और ध्येय

मूल तत्व तो क्षण-क्षण त्रिकाल है,
पंच तत्वों की सीमा से परे, अतल, विकराल है।
अनंत कोटि ब्रह्मांड नायक के चरणों का मैं दास हूँ,
कालचक्र में बंधा कर्म, मोक्ष की आस हूँ।
कण-कण में वह समाहित, नाद अनहद की ध्वनि है,
अदृश्य, अनंत, अपरंपार-हर ओर उसकी गूंज है।
सबसे जुड़ा, फिर भी सबसे अलग,
रेत के भ्रम सा फैला यह जग।
बीते कल की स्मृतियाँ समेटे,
आज-कल को कुडलिनी में लपेटे।
अनवरत बहती धारा अनंत,
शब्दों में सहज संतों का छंद।
विषय-विचार जब विष बन जाए,
असत्य का आवरण स्वयमेव गिर जाए।
ढोंग की दीवारें मिटें, छल की छाया तिरोहित हो,
सत्य का प्रकाश पुंज फटे, हर असत्य की क्षति हो।
स्वयं के ब्रह्मांड में ठहराव, परम चेतना की गति हो,
सत्य की दिव्य जोत जले, अज्ञान तमस की क्षति हो।

# एक इंसान बाकी है

अंतर मन में विषय वस्तु से कहीं कोई करार बाकी है।
तिल-तिल सा होकर ही सिमटा, मझमें अभी यह संसार बाकी है।

है, लकीर उस नदी के जल से खींची जो लगा कि बह गई,
टूटते-टूटते अवशेषों में वह दीवार बाकी है।

तुम विस्मृत करते चलो एक-एक चित्र को चाहे,
पर शब्दों की गूंज से भरा वह खुमार बाकी है।

वैसे चलना तो ऊपरी तल की ओर है हमें,
लेकिन मूल स्थान पे बैठक थी, कहीं निशान बाकी है।

कर्म गति को संतुलित करना जब-जब चाहा संयम साधा,
फिर-फिर लगा वो झकझोरने, बोला- देव होने से पहले जी लो इसे।

जैसे कि साधारण वेश में सहज ही एक इंसान बाकी है।

# नारी: सृजन और सम्मान

प्रतिभा की प्रतिमूर्ति हो तुम,
जीवन की स्फूर्ति हो तुम,
राम जी की रची कलाकृति हो तुम,
भारत की श्रेष्ठ कीर्ति हो तुम।
पावन हो जैसे गंगा नदी,
हर एक हुनर को स्वयं में भरती चली।
खिलने को बाकी बहार और हैं,
तुम्हारे जन्म से मिली जो धरती को
मिला वो उपचार और है।
भारत की बेटी हो,
पचचान हो हमारी अस्मिता की,
निखार लाओ सत्यव्रत का,
और प्रतिबिंब बनो माँ सीता का।
अब कोई किंतु-किंतु-परंतु तुम्हें टोके नहीं।
जो वियजश्री से वंचित कर सके,
अब होंगे वो आँधी के झोंके नहीं।

# बिछड़ते लम्हों की गूंज

लोग गलत थे, वक्त गलता था, हालात गलत थे,
जो किसी छोर पर न मिला जवाब,
तो वो सवालात गलत थे।
समझ न आया, समझा नहीं पाए, रह नहीं पाए,
सब कुछ खुद पर उड़ेल के चलते बने,
विदा... बस कुछ कर नहीं पाए।
फिर मिलना न हुआ,
फटा दामन सिलना न हुआ,
लाग दाग धुलना न हुआ,
जो मुरझाया एक पतझड़ में
फिर उन फूलों का खिलना न हुआ।
यादें हट जाएं,
चित्र कट जाएं,
सारी रील फट जाए,
जो विराट तूफान आकर चला गया,
वो धूल के कण हट जाएं।
सवेरा जागे, आशा मिले, नव चाँदनी फले,
जीवंत मिले, सुधांशु जागे, अरिहंत खिले।

# प्रतिबिम्ब और प्रवाह

जो दर्पण बनेगा उसे चटकना पड़ेगा,
जो चाहेगा भरना, उसे खाली होकर भटकना पड़ेगा।
जो चाहेगा लिखना अपनी कहानी अपनी दवात से,
बिना अटके गुनगुनाने को,
कई बार अटकना पड़ेगा।
हर एक कण से हो तुम्हें प्यार, ये माना,
पर जब सिलवटों सी चाहेगी धूल,
तो झटकना पड़ेगा।
सुराही बनो तो अच्छा,
कि कितना भी जल हो,
पिलाओ कीप से ही,
मटके जैसे गोल बनोगे,
तो दुनिया में मटकना पड़ेगा।

# चलके देखो

यूँ अकेले ही एक सफर करके दखो,
नजारों से पटा पड़ा है आसमां,
ऊंची नजर करके देखो।
वो पहोड़ो पे जमी सुबह की ओस,
वो वादी में लहराते फूलों का कोष।
वो झरनों की कल-कल,
जो बही जा रही है,
वो मिट्ठू की चहचहाहट,
तरंग गा रही है।
वो बीते हुए और आने वाले कल की फिक्र से,
बस डालो दो जोड़ी और चल दो नगर से।
नहीं तो ये फाइलें और आयरन ड्रेस सताती रहेंगी।
जाओ उस पते पर जहाँ न कोई पिन कोड हो,
मन को तराने गाने दो,
चाहे खामोश ये होठ हो।

# चकोर-सी तुम

तुमको जितनी बार सोचू,
उतनी ही एक चकोर चंद्र लगो तुम।
झुमके जैसी आवाज की गूंज,
स्वर्ण जड़ा कमरबंद लगो तुम।
रोज आया करो एक नई खबर बनके,
मंजिल से मिलने को चल दो एक सफर बनके।
तुम कोई रहस्य कथा बन जाओ,
जो कभी सुलझे नहीं,
रेशमी बालों सा आकार लो,
मुड़े नगर उलक्षे नहीं।
पता और शब्द भरकर आओ, चिट्ठी बनके,
रोम-रोम में बसो और महकती मिट्टी बनके।
फिक्र न करना कि संसार क्या फैसला सुनाएगा,
जिस परम ने कहने की हिम्मत दी,
वही कोई हल सुझाएगा।

# तुम्हारी ही बात

तुम्हारी हंसी जैसे सर्दी की धूप,
जो छू जाए, बस जाए रूप।
तुम्हारी आँखें, गहरी झील,
खो जाऊं नील।
तुम चलो तो बहार चले,
हवा भी संग-संग ढले।
फूलों में महक, चाँद में नूर,
तुम हो तो छाया है सुरूर।
तुम्हारी बातें, मीठी कविताएँ,
जिन्हें सुनूं, तो दिल मुस्काए।
तुम हो तो मौसम भी गाए,
खुशबू बनकर मन महकाए।
बस इतनी-सी है अब मुराद,
रहे यूं ही तुमसे मेरी बात।

# धूल से शीतल छाया तक

एक धारा फिर से मन के समुद्र की ओर बहने को यूं तैयार बैठी है,
सहेज रही है रेशम की उन सिलवटों को कर सोलह श्रृंगार बैठी है।
गीत गुनगुना तो रही है जो मुस्कराहट लबों पे छाई है,
गहरे अमावस के द्वंद्व के बाद एक प्रभात किरण रोशनी लाई है।
झड़ रही धूल मेरे मन के घरौंदे की जो कालांतर से थी,
फिर वही शीतल छाया का स्वस्पर्श शोभित हो,
तलाश जिसकी युगांतर से थी।
गीत एवं छंद मेरे अपने स्वरूप को बदल लेंगे,
साथ यदि निष्कलंक और बे शर्त रहा तो फिर सफर मंेचल देंगे।

# डायरी में लिखा ओस

क्यों न डायरी से ही पूंछा जाए कि क्या सुनना है तुझे?
क्यों न कलम को वो आजादी दी जाए कि स्वयं अक्षर चुनना है तुझे?
क्यों न रूप से कहा जाए- अपनी चम को यहाँ बिखेर दो,
क्यों न फूलों से कहा जाए- अपनी महक को हवाओं में उड़ेल दो?
क्यों न झरने से कहा जाए- अपने कलकल
से मेरे अंतःकरण में तरंग भर दो,
क्यों न बादल से कहा जाए- झिलमिल चमाको,
नक्षत्रों के समूह सम रंग कर लो?
क्यों न तुम ये जानने लगो कि वो क्या था- जो हमें लिखना पड़ा
क्यों कि वो चोट हमस ह न पाए।
क्यों न तुम ये सोचो कि क्या हुआ- जो लिखिते गए हम,
पर दो शब्दों में तुमसे कह न पाए।

# छिलकन का त्याग

छिलकन होना कोई खेल नहीं,
अपनी अकड़ को छोड़ना होगा तुम्हें।
मूल तो बाजार में बिकेगा भी नहीं,
सतह पर चाहे लगे कहीं।
लेकिन एक त्याग है- छिलकन होना,
छिलना पड़ता है, पीने के पैमाने की धार सह के।
जो सख्त और सीधा था कुछ पहले,
उसे टूटना और उलझना पड़ता है, रार सक के।
जिसका मूल बाजार में उतना था कि पूरे सामान का हिस्सा बने,
बिकना होगा अब रद्दी या कबाड़ होकर।
हाँ, यदि खुद जैसे हजारों छिलकों को इकट्ठा करे,
तो भरेगा तोष- मजबूती से एक पहाड़ होकर।
छिलकन था तो ऊपर की शान और लड़की की,
एक ही था  अब आया था पेड़ से- टूट के,
कटना पड़ा लकड़हारे के साथ हजार होकर।

# एक रानी की गाथा

## (महारानी गायत्री देवी को समर्पित)

एक रानी की गाथा पढ़ने को अब मन करता है,
जिसकी चर्चा परियों की कहानियों में अक्सर रहता है।
जिससे सौंदर्य की माला, शब्दों के मोती से पिरोई गई,
पुरातत्व की कलम ने जिसकी छवि अमर कर दी कहीं।
राजनीति के गिद्धों ने चाहा उसका भाग्य नोच ले जाना,
दिल्ली के दलालों ने चाहा उसकी आजादी को भी मिटा पाना।
वो रानी, जो खो गई इस नयी लोकतांत्रिक सदी में कहीं,
स्याही के अंधे कानूनों ने पर बंदीगृह की बेड़ियाँ गढ़ीं।
आओ, उस रानी के पथ को फिर से हम पहचानें,
उसकी यादों के अभिलेखों में जीवन का स्पंदन जानें।
क्योंकि कुछ  कहानियाँ केवल इतिहास नहीं होतीं,
वो हमारे भीतर छिपी हुई रूह की आवाज होती हैं।

# आयो रे नटखट

नंद, सुनंद, मंशुका बोले,
''डुबकी मारें खाने से पहले, जल्दी आओ रे!''
कान्हा बोला हँसते-हँसते,
''पत्थरियाँ कुछ बीच में डालो जरा बहादुर से!''
गोपियाँ छुपीं पेड़ों पीछे,
पत्तों की सरसर सुनाई दी,
सुबह-सुबह की मीठी बातों में,
चुपके-चुपके गूंज सुनाई दी।
तभी उड़ती आई एक कंकरी
भरी मटकी पर जा लगी सीधी,
''डुबाक!'' की आवाज हुई,
फूट गई मटकी जैसे बिजली गीली।
गेपियाँ चिल्लाईं, हाथ उठाए,
''आ गऐ शैतान, शोर मचाए!''
''रुको जरा, जो हाथ में आएगा,
बाँस के फल वही खाएगा!''
कान्हा अब न बचेगा रे,
आज तो पहले मारा जाएगा रे!
मइया से कहनी पड़ेगी बात,
''देवता नहीं, दुष्ट है ये गात!''

# चलते-चलते

काश तुझे समझा पाता मैं, क्यों रास्ता बदला चलते-चलते,
खामोशी कह गई सब कुछ, हम चुप रहे थे जलते-जलते।
काश तुझे दिखा पाता मैं, जो देख लिया था पलकों में,
अंधेरा पसरने लगा था राहों में, शाम ढले थे ढलते-ढलते।
धड़कन की आवाज समझता, तो जान लेता दुविधा क्या थी,
तूने मुझको झूंठ कहा, साचा नहीं कुछ, बस चलते-चलते।
पटरियाँ भी उलझती हैं, अंत में जाकर रेखाओं सी,
हर सीधी चाल नहीं सुलझाती, मोड़ बहुत हैं हलके-हलके।
सोच समझ का नाम है जीवन, महसूस करना दिल की सदा,
अहसासों की दुनियाँ में, बच्चे भी बड़े हैं पलते-पलते।
तलाश कर मेरे सच-झूठ की, हक है तुझे इस दिल पे मगर,
कुछ न मिलेगा फिर भी कहना मत- नीयत पे शक चलते-चलते।

# तुमसे ही

तुमसे जो रिश्ता बनाया हमने,
बस, वहीं से कुछ अंजान रहे रौशन हुई हैं।
तुमसे जो दो शब्द हमने कहना शुरू किया,
बस, वहीं से वर्षों से नीरस क्षेत्र में बरसात हुई है।
तुमसे जब वो पहली बार कहा- "सुनो, कुछ रहस्य कहूँ तुम्हें,"
बस, वहीं से फिर हमने चंद शब्द नहीं, पूरी दास्ताना कही है।
तुमसे जो पहला वादा किया कि बात नहीं खुलेगी कहीं,
बस, वहीं से मेरे अपने गड़े हुए यादों निकली और
नई शुरूआत हुई है।
तुमको जब थोड़ा जानना चाहा मैंने,
बस, वहीं से समझ में जुड़ा एक नया आयाम
दिल में भी सरसराहट हुई है।
तुमकसे पूरी तरह समझना नहीं चाहता,
बस, ऐसे ही जीवनभर तुम पर थीसिस करने के
लिए यह सौगात सही है।

# विचार: उद्गम से अनंत तक

सबसे तेज गति जो मन में है, वह विचार है।
यह या तो कोई निश्चित चिंतन है या समाचार है।
विचार वह है जिसका उद्गम या तो अनुभव से है या प्रेरणा से।
विचार वह है जिसका संगम या तो निश्चितता में है या अनंतता से।
विचार विशेष भी है, साधारण भी।
विचार कर्ता की अंतरंग शक्ति है और घटित होने का कारण भी।
विचार वैसे भी शब्द हैं, मोल अपने लक्ष्य से पाते हैं,
लेकिन अंततः हम वैसे होते जाते हैं जैसे हमें विवार आते हैं।

# जब समझ न आये

चल रहा है ऐसे कल के संस्कार और आज के विचार में विप्लव,
विधा को सही ले जाना है,
अटक रहा है असत्य, कह रहा है अनुभव।
साथ जो गुरु शरण और गुरू का मार्गदर्शन है,
ना घेरा बनाए अपने लिए,
व्यर्थ जो मिले, वह फिर प्रभु को अर्पण है।
किसी कीर्ति और यश की चाह भी इसी दुनिया के लिए जागती है,
सुबह से शाम इन उलझनों में यह जिन्दगी भागती है।
हम लिखकर अपनी व्यथा कहते हैं, कोई सुनता है,
हर रोज लाखों सवाल और आशाओं के साि भक्त मंदिर में आता है।
बस वही एक क्षण की प्रतीक्षा है जहाँ से फिर अब बदल जाता है,
फिर उस काल तक परेशान और उलझे हुए
मानव की गाथा वर्षों संसार गाता है।

# हर रोज एक फूल

तुमने बताया कि कितना
आसमान तुमने देखा है,
खैर है कि तुमने अभी
जहाँ में कोई दूसरा दौर
नहीं देखा।
ऐसे तो तुम स्वयं ही धारा
हो, तो बहोगी तल में,
पर सीधे पन्ने पलट लिए
और कहानी मे ठौर नहीं देखा।
तुम चमक हो, और तुम्हारी चाह में आंख हमारी है।
हमें अब कोई और डगर
ढूंढने योग्य नहीं, अब यही
डगर हमें प्यारी है।
तुम कली हो, हर रोज एक
फूल का सृजन करोगी।
जीवन में अधूरा जो पड़ाव
होगा, उसे तुम पूरा करोगी।

# यक्ष प्रष्न

(ज्च न्दपअमतेम)
मैं अधूरी कहानियों से भरी किताब हूँ
जितना साधारण हूँ जग के लिए
प्रभू के लिए उतना नायाब हूँ।
पूर्व नियोजित तो है पथ के मोड़
लेकिन संसार व्यवस्था ही अलग है
साथ चलता है मेरा समय
इसमें कालपुरुष की पग पे झलक है।
यह लिख भी मैं ध्यान से रहा हूँ ध्यान में रहा हूँ
सुरू जीवन के इस यक्ष प्रश्न से
मैं क्यों हूँ कहाँ हूँ
अब तक तराजू मांगता हूँ जो तौल लूँ खुद को
अब एक नींद चाहता हूँ कुछ पल भूल लूँ खुद को
व्यवस्था के व्याकरण से
भाषा से दूर
बाहरी आराम बहुत किया
आंतरिक थकान से चूर।
चलते हुए इस समय भाव में
तनिक स्थिर हो जाऊँ।
स्वयं अंतर से यक्ष हो बन प्रश्न करूँ।
स्वयं का युधिष्ठर हो जाऊँ।

# संसार अच्छा लगता है

हाथ थामों फिर चल पड़े हम।
सच में यह संसार अच्छा लगता है।।
हड़बड़ाऊं यूंही, फिर हड़काया भी जाऊं।
इस रुगन होते पल में इंतजार अच्छा लगता है।।
तुम पूरा तो वैसे भी नहीं पढ़ोगी खत मेरा।
तुमको दो शब्दों में कह दूं इसलिए तार अच्छा लगता है।।
जितना ज्यादा समझूं, उलझूं नहीं सुलझ जाऊं।
यूंही चढ़ता रहे ये खुमार अच्छा लगता है।।
तुम पर खुदको गिरवी रख दूं,
दिवालिया हो जाऊं, कभी न छूटूं,
ये व्यापार अच्छा लगता है।।
तुम कहो तो तुम्हारे शहर आ के बस जाऊं।
वो कहते हैं तुम्हारे शहर में, इनका व्यवहार अच्छा लगता है।।
तुमने जो डांटा तो तड़प सी उठी मन में।
और खा लूं यह आहार अच्छा लगता है।।

# समझो तुम

अभी जो प्रेम ये मेरा तेरे सिवा और नहीं है।
तुझे मैं बावरा लगता हूँ, जिसका ठौर नहीं है।।
ऐसे हुस्न तो लाखों जीनत है जमाने में।
तू मेरे दिल का सन्नाटा है शोर नहीं है।।
मैं भी पक्का खिलाड़ी हूँ, नहीं मैदान छोड़ूगा।
सराय दिल में पाला है, नव अरमान तोड़ूगा।।
तू मुझको छोड़ सकती है, शायद किसी दौराहे पर।
तेरी नीदों की कीमत है मुझे, न मैं ये खाब तोड़ूगा।।
मैं उस दिन के लिए जिन्दा हूँ, कि तेरा खास हो जाऊं।
तेरी सांसों में घुल जाऊं, तेरा एहसास हो जाऊं।।
जो तू इस साल में प्रेम का पर्चा बताए तो।
लवों से खुद पढ़ा देना, कि मैं भी पास हो जाऊं।।
तू खिलाड़ी है और ये मैदान तेरा है।
तुझसे हर मैच मैं हारूं ये अरमान मेरा है।।
जो तू मान ले मुझको तेरे हर रोज का प्रोटीन।
चुटकी भर समा ले मुझको तो एहसान तेरा है।।

# करो मुलाकात

जो वक्त मिला है जीलो कहीं।
सुधा रस अल्प क्षण है पीलो कहीं।।
तुम क्या समझते हो ये सागर है।
तेरे को प्राप्त है इस पल यह गागर है।।
दिन बीत गये ना जो बीतने थे?
रूठे जो भी चले गये, रीझे जो रीझने थे।
क्या खोने आये थे पनघट पे,
क्या नौका लाये थे इस तट पे।
जो चलते रहोगे कुछ न करो,
तो भी लक्ष्य पाओगे मरघट पे।
ये जो तुमसे मिलने आये बैठो इनके साथ,
मस्त रहो मदमस्त किसी रागिनी में थामों इनका हाथ।
ये यौवन से यात्री फिर यों ना आना जाना होगा,
सूखी होगी गागर की नमी फिर यहाँ न आबूदाना होगा।
फिर याद करोगे कि तुमने क्यों, खोया अपनो का साथ।
धन चल भी होगा और अचल भी, पर यादों की लुटी बारात।।
फिर फिर सोच के तुमको, पल-पल रोना आयेगा।
जब साथ में पल ना होगा, सामी तो हलफ उठायेगा।।
अपने-अपने बैग उठाओ, मान लो मेरी बात।
मौसम अच्छा होने दो, फिर चलो शिमला रिसीकेश करो मुलाकात।।

# उद्गम तो होगा

उद्गम तो होगा उस परिणय का इस जीव में।
कान्ती अवश्य अबतरित होगी, प्रभात के राजीव में।।
जो बेला आयेगी, बेलपत्र स्यवं प्रौण होंगे।
धमनी का होगा स्वर, अधर फिर न मौन होंगे।।
किन्चित भी शंका, जो मेरे हृदयपटल पर होगी।
तो लोभ लुपता है आशा मेरी, फिर न अटल पर होगी।।
जो कुछ बर्फ निर्मल जल में परिवर्तित होगी।
क्षुब्ध पड़ी रागिनी गाएगी, फिर नवीन कला हर्षित होगी।।
रोम-रोम तीक्ष्ण ज्वर से जलाऐगें।
चाहे सप्त सागर को कूप में भरे, परिवर्तन लायेंगे।।
तू साधारण नहीं किसी क्षण में, जो यों मृत हो जाये।
जो तू मथ ले जीवन छाछ को, सुघंधित घृत हो जाये।।
ये ना सोच जो अब तक ना घटा वह कैसे घटित होगा।
होगा अवश्य जब अन्तर शक्ति का श्रोत, संगठित होगा।।

# वो एक चित्र

ये नजरें कितने दिनों से वहीं चित्र पर थीं।
हर बात के बाद वहीं याद थी,
हर लम्हे हमें वो दो पल की मुलाकार याद थी।।
तुमने तो बन्द कर दिया था वो एक मात्र जरिया मेरा।
कहाँ बहाता इन आँसुओं को जब सूखा था दरिया मेरा।।
तुमको तो एक नींद में भी शायद खयाल ना आया मेरा।
यहाँ तो हर करबट पे सांस उफनी, दिल न थम पाया मेरा।।
सोचता था कि तुम फिर से इक दिन वो हसींन चेहरा दिखाओगी।
सूखे जा रहे हैं पत्ते भी ऐसे लगा फिर बहार लाओगी।।
आ गईं तुम वापस अपने चित्र फिर डाले।
हमने स्वागत में अपने इत्र डाले।।
पर इस बार तसवीर अलग है, जिसमें एक ठौर है।
अकेली तसवीर न है साथ में कोई और है।।

# पापा सिर्फ यह कहना है

चलते-चलते जो थकी पापा, कन्धे पे जग दिखाया तुमने।
जब खड़ी चढ़ाई पे बोझ ना समझा,
तो अब तो समतल है राह मेरी, यहाँ क्यों ठुकराया तुमने।।
तुम शक्तिपुंज बने, जब कोई शक्शियत न थी मेरी।
अब तो देव, दनुज, दानव की मुझे पहचान है।।
जब पग इतने कोमल थे कि क्षणभर ना संभलें।
अब तो शेरनी सा बल और बगुले की बुद्धि है, ये तेरा एहसान है।।
ये जो विश्वास खुद पर है, वह नींव तुमसे अटल है।
सिर ढका है आशीश से तेरे, खयाल से पूर्ण मानसिक पटल है।।
तुमने शिक्षा दी समझ दी और कहा ये संसार चपल है।
फिर भी ना रोका मुझको भेज दिया कि मेरी मेहनत मेरा कल है।।
मेरी खोज में प्रकृति आपकी ना हो कदाचित, पर प्रकार आपका है।
जो प्रेम कुछ भी प्राप्त होकर ना कम हो, वो प्यार आपका है।।
विश्वास करो परख भी लो, जिसे शिव स्वरूप में आना है।
चाहे जुड़ते जायें कितने भी स्वजन अब, प्रथम देव आपको माना है।।

# कुछ सहारे डूब गए

सम बहती सरिता पे वेग पड़ा, तो किनारे डूब गये।
चलते-चलते शाम हुई लगा कि अकेले हैं, शहारे डूब गये।।
शाम जिनके कन्धे पर सवार आती सुगंध छोड़ती थी।
ललिमा से प्रथम भर के आसमान, तारों की चादर ओढती थी।।
हर एक दिन में क्या नई बात होगी इंतजार था।
वो तंदूर वो वन मस्का और चाय पहला प्यार था।।
वो राजू जो हमारा अनकहा साथी था, एक चाय पिलाता था।
दिनभर की थकान को गप्प से हटाता, धुंआ उड़ाता था।।
कभी-कभी वो अपने जो रोज नहीं मिलते, मिल जाते थे।
सांवन की बहार से पहले, खाली पड़े पेड़ खिल जाते थे।।
अब सब अपने-अपने काम में खोये हैं, शाम उपयोगी बनाने को।
अन्तर को भूल कर चले हैं, योगी मन को भोगी बनाने को।।

# स्वस्थ था शरीर

एक समय था जब पी जाते शेर भर तेल।
अब तो दो कौर बढ़ाने की तबियत कहाँ।।
खेती की सब्जी कितनी भी सख्त हो, घुल जाती थी।
कितनी भी हार्ड फैट खा लूं, खून में मिल जाती थी।।
कभी-कभी के बुखार में भी बस, काढ़ा दवा था।
ये हर प्रकार की दवा के पत्ते हैं, वो जमाना कहाँ था।।
सुबह के फल, दिन की छाछ और रात का घी था।
उस समय कुछ और नहीं, बस खाना पीना सही था।।
दस-दस मंजिल यों चढ़ जाते थे, जैसे दस कदम पे हो।
अब तो थकी-थकी सी तबियत है, जैसे रहमोंकरम पर हो।।

# पड़ोस के अय्यैर अंकल

थी वो पड़ोस में एक साइकिल पुरानी।
रिस्ता जो दिल से था, उन अय्यैर दादा की कहानी।।
उनके घर के खिलौने अब भी मेरे पास हैं।
छोड़ आता था गरमी में वहाँ भी एक निशानी।।
वो उनका मुझ चिट्टी-चिट्टी पुकारना।
उनकी गोद में सिर रखके सोना, सपने संवारना।।
मम्मी की मार और डांट से बचने गये वहाँ।
उनकी नातिन थी याद है नाम था आरना।।
घर वाले कहथे थे थक जाओगे अंकल,
क्यों इसको कंधे पर सवारी कराते हो।
मुझसे कहा जाता था जिद्दी हो गये हो,
जब देखो अंकल का खर्चा बढ़ाते हो।।
आज वहाँ से निकला, कुछ हम खड़े हो गये।
अब सब अपने-अपने में हैं सायद,
जूनियर अय्यैर बड़े हो गये।।
शुकर मनता हूँ उस घर और दहलीज का।
जिन अय्यैर अंकल ने मुझे सुहाने पल दिये, उस चीज का।।

# भीड़ भरा शहर

शहर कह रहा है कि गाड़ियाँ बढ़ गई जैसे 2025 में।
लेकिन सबसे मुख्य बाजार सतायू हो गया।।
सुग्रीव जैसे शंका को धरे हैं।
बस राह बता सकता है जैसे जटायू हो गया।।
जितनी गाड़ियाँ थीं उतनी सड़कें पर्याप्त थीं।
जितने लोग शाम को मिलते थे, रंगोरोआव थीं।।
जिनती चिमनियाँ थीं धुंए कीं, उतने हरे स्थान भी थे।
जितने लोग मृत्यु को प्राप्त होते थे औसत, उतने शमसान भी थे।।
जितने बच्चे पहले विद्यालय और कॉलेज जाते थे।
उतनी संख्या अनुरूप शीटें भी थीं।।
हर चौराहे पर सुव्यवस्थित फुटपाथ थे।
नगर पालिका की बनाई, नई स्ट्रीटें भी थीं।।

# समीपता

कौन मेरे समीप कितना है, यह समझने चलते हैं।
किनता कौन जुड़ा है सम है, ढूढने निकलते हैं।।
यों तो है पहचानने वाले शायद, कुछ वो खून से।
मिल ही कुछ को खुद जाना है,
कुछ पास वो दूर से हो गये।।
बहुत दूर कुछ को पास आते आना है।
कुछ के साथ पल भी घण्टे, दिन समय बन जाता है।
एक ठहरा हुआ समय।।
कुछ के साथ साल और समय बीतकर बताता हुआ बह जाता है,
एक ठहरा हुआ समय।।
तुम ये अंदाजा लेना, कि जब हम साथ बैठे थे तो क्या हुआ,
समय रुका, सम हुआ या ठहराव भी बह सा गया।।
साथ की समीपता समय के ठहराव या बहाव से परखना।
इसी साथ को कहते हैं, साथ रहकर समीपता रखना।।

# तुम्हें ही ढूँढा

यह एक बात कहता हूँ, कह ही देता हूँ।
हाँ वो प्रेम ही था मेरा,
जो बहा इधर आपके ठौर नहीं।।
खो के सारे सपने फिर झटपट समेटे कल को चलता फिरा।
अब रास्ते ढूंढने का दौर नहीं।।
तुम्हारी जो मारीच जैसी नजर कल भी थी और आज भी।
अब तो ख्वाब में भी चित्र है और सादगी।।

# खुद को सँवार लो

ए कवि तू खुद को, इस मायूस जग से उबार ले।
जो कुछ बिखरा भी मिले, उसे संवार ले।।
नाव को तनिक क्षण, प्रेम धार में उतार ले।
अन्तर खुशी सबसे अधिक मूल्यवान है, क्यों बाहरी जग उधार ले।।
जो चल पड़ा है तू और वक्त दोनों, तो पहुंचेगा अवश्य।
सीखता चल हर चाल पे जग में कई गुरू बना, तू बन शिष्य।।
तू ने जब जन्म लिया तब तुझे और तू किसे जानता था।
बचपन में जब जिद्द करता था, रोता था वस्तु पा के मानता था।।
मर्यादाओं का सम्मान कर, यह तेरी मर्यादा है।
लेकिन सिर्फ नियम के नाम पर खुद को भूल जाये,
यह पाप से ज्यादा है।।
जब तेरा मन कर साइकिल पे चल जब करे तब कार ले।
ए कवि तू खुद को इस संसार से उबार ले।।

# डायरी में लिखता हूं

मैं तुमको लिखता एक डायरी में,
तुम अर्ज बन आती हो एक शायरी में।
फिसल जाती हैं मेरी नजर उस चमकदार चेहरे पर,
जैसे सामने बादल की ओढ़नी उढ़ा दी हो एक पेहरे पर।
खो दिया भ्रष्ट हुआ ध्यान, उस तिल पर तुम्हारे,
अब दो दस्तावेज बन चुके हैं, लिखा है मुहर है दिल पे हमारे।
जब से तुमको आखिरी चाहत मान लिया है, पूरी तरह।
तब से जिल्द और किसी न चढ़ती है पूरी तरह।
आँखें या और भी अंगों को पढ़ा, देखा अखबार की तरह,
कैद हो गया हूँ मन के आगोश में, सजा मिली है न छूटने वाले गुनहगार की तरह।
सच तो यह है कि इतना हो महसूस करने की,
आदत बन गई हो तुम, हर रोज एक डायरी भरने की।

# एक दुविधा है

तुम्हारे बारे में एक दुविधा है,
तुम किस्मत में नहीं हो, या तुम्हारा किरदार नहीं आया।
प्रेम तो बढ़ते-बढ़ते बाढ़ बन गया, जो था झलक भर,
बहा तो तट भी तोड़े उसने लेकिन एक झटका तुम तक
ये असरदार नहीं आया।
कई बार सोचा कि अगर नहीं होना था साथ,
तो मिले ही क्यों हम।
बीज बने रहते या खरपत बन पड़े रहते,
तेरे बगीचे में खिले ही क्यों हम।
तुम ये भी चाहती हो कि समझदार हूँ मैं,
पर समझ दिखाने का मौका तो दो।
लेपकर ही तासीर दिखाऊं अपनी,
पहले सानों तो हाथों से, एक चौका तो दो।
मैंने तो सोचा है तुझे समझाने की जिद्द कभी ना करूं,
यूं मान लूं तेरी हर बात बिना शर्त ही।
तू रिस्ता जो दे नाम जो दे पढ़ लूं तुझे अपनी समझ को,
खोल दूं सारे अर्थ बिना अर्थ ही।
कोई भी राग बजे बस मौका नृत्य का चाहिए,
कि झनकार हो जाये।
सीधे-सीधे इतनी निष्ठा से बस साथ रहूं महसूस करूं,
न जाने कब उधर भी प्यार हो जाये।

# आप जैसी सोच नहीं चाहिए....

उन्होंने कहा मुझे, आप जैसी सोच नहीं चाहिए।
हमको भी खुलके जीना पसंद है, संकोच नहीं चाहिए।।
आप ने जो भी पढ़ा हो हमको, समझा नहीं कि कहाँ तक हूँ।
वो रेत भी हूँ जो नदी से निकलूं तो मकान बनूं,
कई मंजिल के ऊंचे जहाँ तक हूँ।।
ऐसा नहीं है कमी है कोई, या कोई कर्ज चुकाना है।
वो तो हमें पंसद है भेजना फूल जो खुशबू, एक मुट्ठी होती है।
त्यौहार तो बस एक बहाना है।।
तुम्हारे ख्याल में इतनी कहानियाँ बुनी कि एक किताब बन गई।
पैसे जो खर्चे कलम पे रंगीन, लाजाबाव बन गई।
आप कहते हो खुद को समझो, आप तो बढ़े जिद्दी हो,
है खुद का अनुमान मुझे हारता हूँ कि
आप कहो कि बड़े फिसड्डी हो।

# यात्रा की प्रतीक्षा

सारथी मत बनो, यह स्वीकार है हमें।
पर जिन्होंने तुम्हें चन्दन माना, उन्हें धूल समझकर मत उड़ाना।।
या तो इस अन्जान सफर में, साथ मत चलो,
या जब दिशायें अपना रुख बदलें, तो विपरीत दिशा मत चलना।
हम स्थिर खड़े हैं आरम्भ रेखा पर आज,
कल की चाह में कोई और गति मत चुनना।
जो सोचते हैं कि कल, इन्हें ठग लेंगे।
उन्हें समझना होगा कि शुभ मति नहीं।
या तो दृष्टा के साथ चलो, समर्पित सारथी बनो।
या शून्य हो जाओ रुको यहीं चल पड़े ता अर्थाती बनो।।
सोच लो, समझ लो, और फिर उत्तर दो।
क्या तैयार हो इस अनिश्चित सफर के लिए।।
हर पल न होगी समता, यहाँ जो अन्जान होगा।
उस उफनते भंवर के लिए।

# मंच पर हम सब

दुनियाँ के रंगमंच पर, खेलकर जो सीखा।
कभी इसका स्वाद, गुड़ सा मीठा, कभी लगे फीका।।

यहाँ बदलते रहते हैं चश्मे, किरदार भी नये होते हैं।
कुछ बस छाया में खो जाते हैं, कुछ असरदार होते हैं।।

हर व्यक्ति मिलता है, एक नये रूप में।
कभी गहराती शाम में, कहीं तेज धूप में।।

कभी हम सेवक, कभी हुक्मदार होते हैं।
जीवन के रंगमंच पर, कितने ही किरदार होते हैं।।

आगे पीछे का कुछ पता नहीं, पर आज मन की बता कहूँ।
यह समझा है- सब झूंठ हो सकता है,
पर कुछ तो औरों से सच्चे अपने यार होते हैं।